REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

जैन ग्रंथोंमें बहत्तर कलाओं का अवदान

सौ. लीना संचेती [1] , साध्वी प्रतिभाजी 'प्राची' [2]
[1] शोधछात्रा , टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे .
[2] मार्गदर्शिका , टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे .

प्रस्तावना :

किसी भी देश की संस्कृति का मुल्य उसके प्राचीन शिल्पस्थापत्य और साहित्य से आँका जाता है । अर्थात, विदया और कला देश का अनमोल धन है । उसी प्रकार, जीवन को ज्ञान-विज्ञान मय सहज, सरल, सुंदर एवं रसपुर्ण बनाने के लिए तत्त्वज्ञान के साथ कला का ज्ञान होना भी अनिवार्य है । मनुष्य अपने जीवन में तनाव पुर्ण व्यस्त जिंदगी जीता है किन्तु, उसी जीवन को लालित्य कला के माध्यम से सहज ही सुंदर बनाता भी है । जबसे मानव संस्कृति की सभ्यता है तब से कला का प्रचलन सतत रूप से प्रवाहमान है।

जैन दर्शन के प्राचीन इतिहास का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है की, अवसर्पिणी काल के चतुर्थ आरे में भगवान ऋषभदेव के समय समस्त परिस्थितीयाँ परिवर्तित हो चली थी । कर्मभूमि प्रवेश के प्राथमिक चरण में भोगभूमि की सहज प्राप्त जीवनोपयोगी सामग्री का ऱ्हास होता जा रहा था । इस परिस्थिती में मनुष्य को नैतिक, सदाचारी, ज्ञानी, संगठन प्रिय एवं युगानुकूल आगे अग्रसर होने के लिए, उस काल के दूरदृष्टी सम्पन्न ऋषभदेव ने उपरोक्त दृष्टिकोन को लेकर शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार करना प्रारम्भ किया । भगवान ऋषभदेव ने गृहस्थकाल में पुत्री ब्राम्ही को अक्षर-लिपी कला, सुंदरी को अंक-लिपी - कला तथा भरत बाहुबली आदि पुत्रों को अर्थशास्त्र, राजनिती, नाट्य आदि कलाओं का प्रशिक्षण दिया था, इसका वर्णन आदिपुराण में पाया जाता है[१] ।

जैन आगमों में अंग साहित्य और उपांग साहित्य का बहुत महत्त्व है । प्राचीन शिक्षा पद्धति कलाओं के माध्यम से जीवन का आवश्यक अंग मानी जाती थी । उस युग में शिक्षा का प्रारंभ आठ वर्ष में ही माना गया । व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के सर्वांगिण विकास हेतु चारित्र्य का संगठन, व्यक्तित्व निर्माण, संस्कृति की रक्षा इन कलाओं के माध्यम से पुर्ण होती रही थी ।

आगम ग्रंथोंमे कलाओं का उल्लेख

जैन आगमों में बहत्तर कलाओं का उल्लेख प्राप्त होता है । इन बहत्तर कलाओं के नाम समवायांग सूत्र, [२] ज्ञाताधर्मकथांग[३] सूत्र, औपपातिक सूत्र[४], राजप्रश्नीय सूत्र[५], जम्बूद्वीप प्रज्ञाप्ति[६], कल्पसूत्र सुबोधिका टीका[७] में आते है, उल्लेख इसप्रकार है ।

	समवायांग सूत्र	ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र	औपपातिक सूत्र	राजप्रश्रिय सूत्र
१.	लेखनकला	लेखनकला	लेखनकला	लेखनकला
२.	गणितकला	गणितकला	गणितकला	गणितकला
३.	रूपकला	रूपकला	रूपकला	रूपकला
४.	नाट्यकला	नाट्यकला	नाट्यकला	नाट्यकला
५.	गीतकला	गीतकला	गीतकला	गीतकला
६.	वाद्यकला	वाद्यकला	वाद्यकला	वाद्यकला
७.	स्वरगतकला	स्वरगतकला	स्वरगतकला	स्वरगतकला

८.	पुष्करगत कला	पुष्करगत	पुष्करगत	पुष्करगत
९.	समताल कला	समताल	समताल	समताल
१०.	द्यूतकला	द्यूतकला	द्यूतकला	द्यूतकला
११.	जनवाद कला	जनवाद कला	जनवाद कला	जनवाद कला
१२.	पोरेकच्च कला	पाशक	पाशक	पासक
१३.	अष्टापद कला	अष्टापद	अष्टापद	अष्टापद
१४.	दकमृत्तिका कला	पुरःकाण्य	पौरस्कृत्य	पुरःकाण्य
१५.	अन्नविधी कला	दकमृत्तिका	उदकमृत्तिका	दकमृत्तिका
१६.	पानविधी	अन्नविधी	अन्नविधी	अन्नविधी
१७.	वस्त्रविधी	पानविधी	पानविधी	पाणविधी
१८.	शयनविधी	वस्त्रविधी	वस्त्रविधी	वस्त्रविधी
१९.	आर्याविधी	विलेपनविधी	विलेपनविधी	विलेपनविधी
२०.	प्रहेलिका	शयनविधी	शयनविधी	शयनविधी
२१.	मागधिका	आर्या	आर्या	आर्या
२२.	गाथाकला	प्रहेलिका	प्रहेलिका	प्रहेलिका
२३.	श्लोककला	मागधिका	मागधिका	मागधिका
२४.	गंधयुति	गाथा	गाथा	निद्रायिका
२५.	मधुसिक्य	गीति	गीतिका	गाथा
२६.	आभरणविधी	श्लोक	श्लोक	गीतिका
२७.	तरुणीप्रतिकर्म	हिरण्ययुक्ति	हिरण्ययुक्ति	श्लोक
२८.	स्त्रीलक्षण	स्वर्णयुक्ति	स्वर्णयुक्ति	स्वर्णयुक्ती
२९.	पुरुषलक्षण	चुर्णयुक्ति	गन्धयुक्ति	स्वर्णयुक्ती
३०.	हयलक्षण	आभरणविधी	चुर्णयुक्ति	आभुषण
३१.	गजलक्षण	तरुणीप्रतिकर्म	आभरणविधी	तरुणीप्रतिकर्म
३२.	गोलक्षण	स्त्रीलक्षण	तरुणीप्रतिकर्म	स्त्रीलक्षण
३३.	कुक्कुटलक्षण	पुरुषलक्षण	स्त्रीलक्षण	पुरुषलक्षण
३४.	मेंढळक्षण	हयलक्षण	पुरुषलक्षण	हयलक्षण
३५.	चक्रलक्षण	गजलक्षण	हयलक्षण	गजलक्षण
३६.	छत्रलक्षण	गोलक्षण	गजलक्षण	कुक्कुटलक्षण
३७.	दंडलक्षण	कुक्कुटलक्षण	गोलक्षण	छत्रलक्षण
३८.	असिलक्षण	छत्रलक्षण	कुक्कुटलक्षण	चक्रलक्षण
३९.	मणिलक्षण	दण्डलक्षण	चक्रलक्षण	दण्डलक्षण
४०.	काकणीलक्षण	असिलक्षण	छत्रलक्षण	असिलक्षण
४१.	चर्मलक्षण	मणिलक्षण	चर्मलक्षण	मणिलक्षण
४२.	चन्द्रचर्या	काकणीलक्षण	दण्डलक्षण	काकणीलक्षण
४३.	सूर्यचर्या	वास्तुविदया	असिलक्षण	वास्तुविदया
४४.	राहुचर्या	स्कन्धावारमान	मणिलक्षण	नगरमान
४५.	ग्रहचर्या	नगरमान	काकणीलक्षण	स्कन्धावार
४६.	सौभाग्यकर	व्यूह	वास्तुविदया	मानवार

LBP PUBLICATION

४७.	दौर्भाग्यकर	प्रतिव्यूह	स्कन्धावारमान	प्रतिचार
४८.	विदयागत	चार	जगर निर्माण	व्यूह
४९.	मन्त्रगत	प्रतिचार	वास्तुनिवेशन	चक्रव्यूह
५०.	रहस्यगत	चक्रव्यूह	व्यूह	गरूडव्यूह
५१.	समास	गरूडव्यूह	चार	शकटव्यूह
५२.	चारकला	शकटव्यूह	चक्रव्यूह	युद्ध
५३.	प्रतिचारकला	युद्ध	गरूडव्यूह	नियुद्ध
५४.	व्यूहकला	नियुद्ध	शकटव्यूह	युद्धायुद्ध
५५.	प्रतिव्यूहकला	युद्धनियुद्ध	युद्ध	अष्टियुद्ध
५६.	स्कन्धावार	दृष्टियुद्ध	नियुद्ध	मुष्टियुद्ध
५७.	नगरमान	मुष्टियुद्ध	युद्धतियुद्ध	बाहुयुद्ध
५८.	वास्तुमान	बाहुयुद्ध	मुष्टियुद्ध	लतायुद्ध
५९.	स्कन्धावारनिवेश	लतायुद्ध	बाहुयुद्ध	इषुयुद्ध
६०.	वास्तुनिवेश	इपुशास्त्र	लतायुद्ध	छरुप्पवाद
६१.	नगरनिवेश	छरूप्रवाद	इषुशस्त्र	धनुर्वेद
६२.	इष्वस्त्रकला	धनुर्वेद	धनुर्वेद	हिरण्यपाक
६३.	छरुप्पवाद	हिरण्यपाक	हिरण्यपाक	हिरण्यपाक
६४.	अश्वशिक्षा	स्वर्णपाक	सुवर्णपाक	मणिपाक
६५.	हस्तिशिक्षा	सूत्रखेल	वृत्तखेल	धातुपाक
६६.	धनुर्वेद	वस्त्रखेल	सूत्रखेल	सूत्रखेल
६७.	हिरण्यपाक	नलिकाखेल	नलिकाखेल	वृत्तखेल
६८.	युद्ध	पत्रच्छेद	पत्रच्छेद	नालिकाखेल
६९.	सूत्रखेड	कटच्छेद	कटच्छेद	पत्रच्छेद
७०.	पत्रच्छेदय	सजीव	सजीव	कटच्छेद
७१.	सजीव-निर्जीव	निर्जीव	निर्जीव	सजीव-निर्जीव
७२.	शकुनिरुत	शकुनिरुत	शकुनिरुत	शकुनिरुत

कलाओं की संक्षिप्त में परिभाषा

लेखनकला- लिखने की कला, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को बिना बोले दूसरों पर भली-भाँती प्रकट कर सकते है।

गणितकला- इस कला से वस्तुओं की संख्या और उसके परिमाण या नापतौल का उचित ज्ञान हो जाता है।
रुपकला- इस कला के द्वारा लेप्य, शिला, सुवर्ण, मणि, वस्त्र और चित्र आदि में यथेष्ठ रुप का निर्माण किया जा सकता है।

नृत्य कला- इस कला में सुर-ताल आदि की गति के अनुसार अनेक विद्य नृत्यके प्रकार सिखना।

गीत कला- किस समय कौन-सा स्वर आलापना चाहिये? उस स्वर के आलापने से क्या प्रभाव पडता है, इन का बोध करना।

वाद्य बजाने की कला- तरह तरह के वाद्य बजाने की कला जानना।

LBP PUBLICATION

स्वर जानना- संगीत के सात-स्वरों को जानने की कला।

वाद्य सुधारना- वादयों संबंधी जानकारी प्राप्त करने पर उसे सुधारने की भी कला जानना।

सुरताल कला- संगीत के सात स्वरों के अनुसार अपने हाथ या पैरों की गति को ढोल, मृदंग या तबले पर समान ताल में साधनें की कला।

धूत कला- प्राचीन काल में कलाओं में परिगणित द्यूत (जूआ) केवल मनोरंजन हेतु खेला जाता था। परन्तु समयानुसार यह कला जीवन के लिए अभिशाप बनती गई। जिसके उदाहरण महाभारत में दिखाई देते है।

जनवाद कला- लोगों के साथ वाद-विवाद करने की कला जानना।

पासग कला- पासों को भी अपने अनुसार गिराने की कला को जानना। महाभारत में शकुनि इस में महारथ हासिल किए था।

अष्टापद कला- चौपड खेलने की कला जानना। नगर की रक्षा करना यह कला में आता था।

एदक-मृत्तिका- जल तथा मिट्टी को मिलाकर उससे बरतन बनाने की कला जानना।

अन्नविधि- अनाज पैदा करने से लेकर भोजन परिपाक करनेकी विधी का ज्ञान होना।

पान-विधी- पेय पदार्थोंका प्रयोग तथा उसके निष्पादन का ज्ञान प्राप्त करना।

वस्त्रविधी- वस्त्रों संबंधी संपुर्ण जानकारी तथा उसके विविध प्रकार बनाने की विधी का ज्ञान लेना।

विलेपन-विधी- देश, काल और पात्र की पहचानकर शरीर को ताजा निरोग और यथोचित शर्म तथा ठंडा रखने के लिए कैसे बनाया जाता है। उसे बनने के लिए किन-किन पदार्थोंका उपयोग कब कब करना चाहिए इसका ज्ञान प्राप्त करना ८।

शयनविधी- शय्या आदि बनाना, उसे सजाने की कला का ज्ञान प्राप्त करना

आर्याविधी- आर्या आदि छन्द बनाने की कला जानना।

प्रहेलिका- गुढ आशययुक्त गद्यपद्यात्मक रचना करना तथा पहेलियोंको जानना।

मागधिका- मगध देश की भाषा में काव्य की रचना करना अथवा स्तुती पाठ करनेवाले चारण-भाटों की कला।

गाथा कला- प्राकृत भाषा तथा शौरसेनी, अर्धमागधी, पैशाची आदि लोक भाषाओं में गाथाओं की रचना करना।

गीतिका- गेय काव्य अयति गीतीका, उपगीतिका आदि की रचना करना।

LBP PUBLICATION

श्लोककला- संस्कृत भाषा में श्लोक की रचना करना।

हिरण्ययुक्ति- नई चाँदी बनाना, उसके आभुषण बनाना।

सुवण्ण युक्ति- सुवर्ण बनाना तथा उसके आभुषण आदि बनाना।

चूर्णयुक्ति- इस कलासे बहुमूल्य धातुयें, जडी-बूटीयों के संयोगसे विभिन्न औषधियों द्वारा तान्त्रिक विधिसे निर्मित चूर्ण डालकर दूसरे को वशमें करना।

आभरण-विधी- विविध प्रकारके आभूषण बनाने तथा उसे धारण करने की विधि जानना।

तरूणीप्रतिकर्म- स्त्रियाँ, युवतियों के रूप को निखारने की कला जानना।

स्त्रीलक्षण- इस कला से नारीयों की जातीयाँ, गुण तथा पद्मिनी, हस्तिनी, शंखिनी व चित्रिणी आदि स्त्रियोंके लक्षणों का ज्ञान होना।

पुरुष लक्षण- इस कला से पुरुषों के शरीर, लक्षण, रहन-सहन, बोल-चाल प्रकृति तथा पुरुषों के भेदों का ज्ञान होना।

हयलक्षण- इसमें अश्वों संबंधी परिक्षा रंग, पैरों से शुभ-अशुभ लक्षण तथा जातियों संबंधी ज्ञान होना।

गजलक्षण- हाथीयों की जाती, रंग, रुप, आकार, प्रकार, लक्षण संबंधी जानकारी प्राप्त करने की कला।

गो-लक्षण- गाय बैलोंके लक्षणोंका ज्ञान होना।

कुक्कुट लक्षण- मुर्गे के लक्षणों का ज्ञान होने की कला।

चक्र लक्षण- चक्र (आयुधों)के शुभाशुभ लक्षणों को जानना।

छत्र लक्षण- छत्र के शुभाशुभ लक्षणों को जानना।

चर्मलक्षण- ढाल आदि चमडों से बनी विशिष्ट वस्तुओं के लक्षणों का ज्ञान होना।

दण्ड लक्षण- इस कलासे हाथ में लेने के दण्ड, लकडी आदि की उपयोगिता, आदि लक्षणों की शुभ-अशुभता को जानना।

असिलक्षण- खड्ग, तलवार, बर्छी आदि के शुभ-अशुभ को जानना।

मणिलक्षण- मणियों के शुभ-अशुभ लक्षणों को जानना, रत्नों की जाति, उनका मुल्य, उपयोगिता इ. बातोंका ज्ञान होने की कला।

काकणीलक्षण- काकणी नामक रत्न के शुभ-अशुभ लक्षणों को जानना।

LBP PUBLICATION

चर्म-लक्षण- चमडे की परिक्षा करना अथवा चर्मरत्न में शुभ-अशुभको जानना।

वास्तुविद्या- भवन आदि निर्माण तथा मकान, दुकान आदि इमारतें बनाने की कला

ग्रहचर्या- सुर्य, चंद्र, राहु-केतु आदि ग्रहों के संचार-मार्ग, उनकी गती तथा ग्रहण, शुभ-अशुभ फलों को जानने की कला का ज्ञान होना।

स्कन्धावार मान- शत्रुसेना को जितने के लिए अपने सेना का पडाव, छावनी कहाँ जलनी? उनके रसद का प्रबन्ध कैसे, कितना करना, मोर्चा किस प्रकार लगाना आदि की जानकारी करने की कला।

नगर- निर्माण कला- नगरों का निर्माण करने हेतु लगनेवाली आवश्यक बातोंका ज्ञान, कैसे, कहाँ, ग्रामी, बस्तीयों को बसाने की जानकारीसे उस कला का बोध होता है। तथा युद्धोपयोगी विशेष नगर-रचना की जानकारी रखना।

व्यूह- आकार विशेष में सेना स्थापित करना। जैसे प्रतिव्यूह, चक्रव्यूह, गरुडव्यूह शकटव्यूह विविध आकार में सेनाको मुकाबले हेतु स्थापित करना।

युद्ध- लड़ाई की कला जानना। जिसमें, पैदल युद्ध करनेकी कला (नियुद्ध) तलवार, भालेद्वारा युद्ध करना (युद्धातियुद्ध), मुक्कोद्वारा युद्ध (मुष्टियुद्ध), मुजाओं द्वारा (बहुयुद्ध), लातों द्वारा (लता युद्ध), सामान्य युद्ध, विशेष युद्ध लड़ने की कला जानना।

ईसत्थ- थोडे को जादा, जादा को कम दिखाने की कला जानना [९]। कहीं कहीं पर इसका अर्थ नाग-बाण आदि के प्रयोग का ज्ञान कहा है [१०]।

धनुर्वेद- धनुर्विद्या, धनुष्य-बाण चलाने की कला जानना।

छरुप्पवाय- क्षुर-प्रवाह, छुरा आदि फेंककर वार करने का ज्ञान होना।

हिरण्य, सुवण्ण पाक- रजत (चांदी) तथा सुवर्ण सिद्धी की कला जानना अर्थात खान से सोना निकालने के अतिरिक्त अन्य पदार्थों के साथ-साथ जड़ी-बुटियों के रस, का मिश्रण किन मात्रा में मिलाकर उस घोल द्वारा सोना बनाने की तथा चांदी बनाने की विधी जानना[११]।

वृत्त खेल- रस्सीपर चढकर खेल दिखाने की कला जानना।

सूत्र छेद (कहीं पर सूत्र खेल भी आया है।)- सूत्र का छेदन करना सूत्र खेल याने कच्चे सूत द्वारा करिश्मा दिखाने की कला जानना।

नालियाखेडं- कमल की नाल का छेदन करना [१२]। अथवा नलिका में पासे या कौडींयां डालकर गिराना, जुआ खेलने की एक विशेष प्रक्रिया की जानकारी रखना [१३]।

पत्रछेदन कला- पत्र छेदन करना। किसी भी वृक्षके कितने की उँचे, नीचे या मध्यभाग वाले किसी भी निर्धारित पत्रको उसके निश्चित स्थानपर निशानेद्वारा निर्धारित समय के केवल एक ही बार में बेधने (छेदने) की कला सिखना[१४]।

LBP PUBLICATION

सजीव-निर्जीव कला- मृत को जीवित करना तथा जीवित को मृत करना। कहीं कहीं पर किसी मृतप्राय या मृतक दिखाने वाले व्यक्ति को जो अकाल में ही किसी कारण- विशेष से मृत्यु को प्राप्त होता है दिखाई दे रहा हो, मंत्र-तंत्र आदि विधियों के ढाल या किसीभी प्रकार की संजीवनी जडी को उस को मृतप्रायः शरीर के स्पर्श करा कर उसे पुनः जीवित कर देना इस कला में आता है।

शकुनिरुत- काक, घूक आदि पक्षियों की बोली पहचानना। इस कला द्वारा तरह तरह के शकुन-अपशकुन जानने की शक्ती मनुष्य में आ जाती है। पशु-पक्षियों की बोलीसे इ. कई बातोंसे शुभ-अशुभ की जानकारी इसके द्वारा हो जाती है।

कल्पसूत्र की सुबोधिका टीकाओंमें भी ७२ कलाओं का वर्णन आता है, परंतु वे उपरोक्त कलाओंसे कुछ भिन्न है। स्वाभाविक हो की जिस समय ग्रंथ की रचना हुई हो, उस समय में सामाजिक जीवन की उपयुक्तता नुसार उनमें कुछ बदल किए गए हो जैसे व्याकरण, पठन, सिद्धांत, तर्क, प्राकृत, संस्कृत, आगम, संहिता, इतिहास, सामुद्रिक, विज्ञान, तरूचिकित्सा, यन्त्रक, वशीकरण, गारुड, योगांग, विद्यानुवाद दर्शन आदि [१५]।

भारत की प्रमुख तीन धर्मपरंपराओं के साहित्य में भी कलाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। आचार्य वात्सायन के कामसूत्र में भी ६४ कलाओं का वर्णन आता है [१६]। जिनमें भी मिलता दिखती है।

पुरुषों के भांति महिलाओं की भी चौसठ कलाओं के उल्लेख जम्बूद्वीप-प्रज्ञाप्ति में प्राप्त होते है। कुछ कलाएँ पुरुषों की कलाओं से मेल खाती है। परन्तु कुछ विशेष भी दिखाई देती है जैसे- औचित्य, मंत्र-तंत्र, फलाकृष्टि, संस्कृतजल्प, अष्टादश लिपी परिच्छेद, तत्काल बुद्धि, रन्धन, केशबन्धन, वितण्डवाद, लोकव्यवहार, गृहाचार आदि [१७]।

इसप्रकार कहीं कलाओं की संख्या ६४ बताई है तो क्षेमेंन्द्र के कलाविलास ग्रन्थ में सौ से भी अधिक का वर्णन किया हुआ दिखाई देता है। जैन साहित्य मेंभी कलाओं की संख्या के बारेमें एकमत नहीं है और उनके विषयों में भी भिन्नता दिखाई देती है। शुक्राचार्य के नीतिसार ग्रन्थ में कलाएँ ६४ कही है। शुक्राचार्य के अभिमत से कला वह अद्‌भूत शक्ति है जिसे गुंगाभी अभिव्यक्त कर सक्ता है [१८]। इन बहत्तर कलाओं को सिखानेवाले कलाचार्य का सम्मान भी बडे आदर-सत्कार तथा विपुल प्रीतिदान देकर होता था [१९]।

उपसंहार

प्राचीन काल से ही भारतवर्ष में कलाओं का प्रचार-प्रसार होता रहा है। विभिन्न प्रकार की कलाएँ अपनी चरम-सीमा पर पहुंची थी। कलाएँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को स्पर्श करती है। इनमें शारिरीक, मानसिक, बौद्धिक विकास का अंतर्भाव होता रहा है। तो गीत, नृत्य जैसे मनोरंजनात्मक विषय भी उपेक्षित नही रहे। कलाओं के नामों को सुक्ष्मता से देखने पर यह पता चलता है की आज वर्तमान में प्रचलित आर्टस्, सायन्स और कॉमर्ससे जुडी सभी प्रकारके शिक्षण को इसमें शामिल किया गया है। कारिगरी संबंधी समस्त शाखाएँ, उसी प्रकार युद्ध संबंधी भी बारीकियाँ कलाओं से संबंधित शिक्षण में सम्मिलीत की गई थी। गणित विषय भी इससे अछुता नही रहा।

जीवन के सर्वांगिण विकास में सहायक प्राचीन काल की शिक्षापद्धति को यदि आज भी शिक्षण क्षेत्र में निर्धारित की जाए तो सचमुच बडी उपयोगी सिद्ध होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१) आदि - पुराण, १०३ / १०४
२) समवायाग सूत्र, युवाचार्य श्री मधुकर मुनि, पृ. १२९
३) ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र, युवाचार्य श्री. मधुकर मुनि, पृ. २७-३४
४) औपपातिक सूत्र, पृ. १४५, १४६
५) राजाप्रश्रिय सूत्र, ..., पृ. २०४, २०५
६) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र, ..., वक्षस्कार - २, १३६, १३७
७) कल्पसूत्र सुबोधिका टीका, विनय विजय उपाध्याय

८) उपाध्याय कनकनंदी, ७२ कलाएँ, पृ.ृ७
९) ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र, प्र. ४९
१०) औपपातिक सूत्र, पृ. १४६
११) उपाध्याय कनकनंदी, ७२ कलाएँ, पृ. २२
१२) ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र, पृ. ४९
१३) औपपातिक सूत्र, पृ. १४७
१४) उपाध्याय कनकनंदी, ७२ कलाएँ, पृ. ४
१५) कल्पसूत्र सुबोधिका टीका, विनय विजय उपाध्याय
१६) वात्सायन, कामसूत्र, विद्यासमुद्येश प्रकरण
१७) जम्बूद्वीपप्रज्ञाप्ति, वक्षस्कार २, पत्र संख्या १३९, १४०.
१८) शुक्राचार्य, नीतसार, 'शक्ती मुकोऽपि यत कर्तुकलासंज्ञंत तत.
१९) ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र, श्री. मधुकर मुनि, पृ. ५०

सौ. लीना संचेती
शोधछात्रा , टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे .

LBP PUBLICATION